गुरु नानक – सबद ४९

कुंगू की कांइआ रतना की ललिता अगर वास तन सास ॥

रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १७

कुंगू की कांइआ रतना की ललिता अगर वास तन सास ॥
अठसठ तीर्थ का मुख टिका तित घट मत विगास ॥
ओत मती सालाहणा सच नाम गुणतास ॥१॥
बाबा होर मत होर होर ॥
जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोर ॥१॥ रहाउ ॥
पूज लगै पीर आखीऐ सभ मिलै संसार ॥
नाउ सदाए आपणा होवै सिध सुमार ॥
जा पत लेखै ना पवै सभा पूज खुआर ॥२॥
जिन कउ सतिगुर थापिआ तिन मेट न सकै कोइ ॥
ओना अंदर नाम निधान है नामो परगट होइ ॥
नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंड सदा सच सोइ ॥३॥
खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥
जलीआ सभ सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥
नानक नाम विसारिऐ दर गइआ किआ होइ ॥४॥८॥

सार: जब हम दुश्मनी और द्वैतभाव को अपने विचारों पर हावी होने देते हैं तब हम झूठ को बढ़ावा देते हैं और हानिकारक परिणामों को न्योता देते हैं। नकारात्मक भावनाएँ विभाजन को बढ़ावा देती हैं और हमें सम्पूर्णता के बड़े विचार से दूर कर देती हैं। इससे धोखे और अविश्वास का चक्र चलता रहता है जो हमारे सामूहिक विकास और कल्याण में बाधा डालता है।

कुंगू की कांइआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥
आत्म-खोज करने वाला शरीर केसर की तरह शुद्ध होता है। सत्य बोलने वाली जीभ रत्नों के समान मूल्यवान होती है और जो साँस अहंकार से परे होती है वह अगरबत्ती की सुगंध जैसी होती है।

अठसठि तीर्थ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥
विनम्र आचरण का महत्व अड़सठ श्रद्धा से पूर्ण तीर्थ स्थलों के पवित्र चिह्नों के समान है जबकि ज्ञान से भरा हृदय वास्तव में सच्चा आनंद जानता है।

ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥१॥
जब सच्चे आत्म-चिंतन को एक गुण के रूप में महत्व दिया जाता है तब वह समझ प्रशंसनीय होती है। (१)

बाबा होर मति होर होर ॥
हे ज्ञानी, जो ज्ञान सर्वव्यापी एकता के अलावा किसी अन्य चीज़ को बढ़ावा दे, वह मन को भटका देता है।

जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥१॥ रहाउ ॥
जब शत्रुता और द्वैत का अभ्यास किया जाता है, तब वह झूठ के नकारात्मक पहलुओं को सशक्त बनाते हैं। (१)(विराम)

पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥
आप एक आध्यात्मिक गुरु के रूप में पूजे जा सकते हैं और पूरे संसार से सम्मान प्राप्त कर सकते हैं।

नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥
आप एक प्रसिद्ध लोकप्रिय नाम अपना सकते हैं और अलौकिक शक्तियों के लिए जाने जा सकते हैं।

जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥२॥
लेकिन ऐसी महिमाओं के होते हुए भी यदि आपके कार्यों को आत्मा, जो नैतिक निर्णय लेने वाली है, स्वीकार नहीं करती तब यह सारी प्रशंसाएँ झूठी हैं। (२)

जिन कउ सतिगुरि थापिआ तिन मेटि न सकै कोइ ॥
जिन लोगों ने अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लिया है वह अपने संकल्प में डगमगाते नहीं।

ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥
उनके भीतर आत्म-चिंतन का ख़ज़ाना है जिसके माध्यम से चिंतन का गुण प्रकट होता है।

नाउ पूजीऐ नाउ मंनीऐ अखंडु सदा सचु सोइ ॥३॥
चिंतन प्रार्थना का एक रूप है। आत्म-चिंतन वह आवाज़ है जिसे सुना जाना चाहिए। जो लोग इस गुण का अभ्यास करते हैं वह शाश्वत और ईमानदार होते हैं। (३)

खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥
मृत्यु के बाद, जब धूल से बना शरीर धूल में मिल जाता है तब चेतना का क्या होता है।

जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥
जब हम मृत्यु का सामना करते हैं तब हमारी सभी चतुर सांसारिक उपलब्धियाँ अर्थहीन हो जाती हैं, हमें केवल छूटे हुए अवसरों का दुख रह जाता है।

नानक नामि विसारिऐ दरि गइआ किआ होइ ॥४॥८॥
नानक कहते हैं, यदि चिंतन की प्रथा को भुला दिया गया तब अंततः जब कोई अपनी चेतना के भीतर देखेगा, तब क्या होगा। (४)(८)

तत्त्व: गुरु नानक इस बात पर जोर देते हैं कि खुद को समझने और चेतना को गहरा करने के लिए आत्म-चिंतन बहुत ज़रूरी है। आत्म-खोज के मार्ग पर चलने वाला शरीर शुद्ध होता है। ईमानदारी और सच्चाई से बोले गए शब्द बहुमूल्य होते हैं। और जो साँस अहंकार से परे होती है, वह सुगन्धित होती है जो शांति और स्थिरता को आमंत्रित करती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com